

क. इस्राएल के लोगों के लिए अनुग्रह (यहोशू 2:1, 22-24):

❖ दूसरा मौका।

- जब मूसा ने कनान का निरीक्षण करने के लिए जासूस भेजे, तो लोगों ने अंदर जाने से इनकार कर दिया। चालीस साल बाद, नए जासूस भेजे गए, लेकिन नतीजे अलग रहे।
 - (1) जासूस भेजे जाते हैं: सार्वजनिक रूप से (12 जासूस)/गुप्त रूप से (2 जासूस)
 - (2) जासूसों का प्रदर्शन: 40 दिन निरीक्षण/3 दिन छिपकर
 - (3) जासूसों की रिपोर्ट: वे लोगों को हतोत्साहित करते हैं/वे यहोशू को प्रोत्साहित करते हैं
- यद्यपि नई पीढ़ी बिलाम के प्रलोभन के सामने बुरी तरह असफल हो गई थी, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें दूसरा मौका दिया (गिनती 25:1-3, 31:16; यहोशू 2:1)।
- इस बार वहाँ अंगूर के गुच्छे नहीं थे, देश के फल नहीं थे। केवल विश्वास की एक कहानी (राहाब की) थी, जिसने इस्राएल को वादा किए गए देश पर कब्जा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

ख. राहाब के लिए अनुग्रह (यहोशू 2:2-21):

❖ राई के दाने के बराबर विश्वास।

- राहाब का विश्वास किस पर आधारित था (यहोशू 2:9-11)? ध्यान दीजिए कि राहाब उन घटनाओं के बारे में बात करती है जिनके बारे में सभी जानते थे, जैसे लाल सागर पार करना। लेकिन जबकि बाकी लोग इब्रानियों के परमेश्वर का भय मानते थे, उसने उसके पंखों तले शरण लेना चुना (यहोशू 2:12-13)।
- यदि वह ईश्वर में विश्वास करती थी, तो उसने जासूसों की मदद करने के लिए झूठ का सहारा क्यों लिया? उसके अनुभवहीन विश्वास में परमेश्वर की इच्छा की पूर्ण समझ नहीं थी। उसने जासूसों की मदद करने तथा अपनी और अपने परिवार की जान बचाने के लिए यथासंभव प्रयास किया। ज्ञान तो बाद में आना था।
- बाइबल उसके द्वारा लिए गए निर्णय के लिए, परमेश्वर के कार्य करने के तरीके को समझने के लिए, तथा जिस प्रकार उसने अपने शब्दों को ठोस कार्यों के साथ समर्थित किया, उसके लिए उसकी सराहना करती है (याकूब 2:25)।
- राहाब एक उदाहरण है जो यरीहो के किसी भी निवासी के साथ क्या हुआ होता जिसने परमेश्वर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था।

❖ वाचा राहाब तक विस्तारित हुई।

- राहाब का तर्क निर्विवाद था: मैंने दया करके [हेसेद] तुम्हें बचाया है; अब दया करके मुझे और मेरे पिता के घराने को बचाओ (यहोशू 2:12-13)।
- यद्यपि वह इसके बारे में नहीं जानती थी, राहाब इस्राएल से कह रही थी कि वह उसके साथ वैसा ही व्यवहार करे जैसा परमेश्वर ने इस्राएल के साथ किया था, अर्थात् दयालुता से [हेसेद] (व्यवस्थाविवरण 7:12)।
- जासूसों ने राहाब से वही शर्तें पूरी करने को कहा जो उन्होंने मिस्र में मौत से बचने के लिए पूरी की थीं। इस तरह, वह इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा में शामिल हो गई।
 - (1) इस्राएल को फसह के दिन:
 - (a) उन्हें घर की चौखट पर खून से अभिषेक करना था (निर्गमन 12:7)
 - (b) अगर वे घर से बाहर निकलते, तो मर जाते (निर्गमन 12:13)
 - (2) यरीहो में राहाब:
 - (a) उसे अपनी खिड़की में लाल डोरी बाँधनी थी (यहोशू 2:18)
 - (b) अगर वह घर से बाहर निकलती, तो मर जाती (यहोशू 2:19)

ग. गिबोनियों के लिए अनुग्रह (यहोशू 9):

❖ धोखेबाज़ राजदूत।

- राहाब ने जासूसों को बचाने के लिए अचानक झूठ बोला। लेकिन गिबोनियों ने जानबूझकर, धोखे के इरादे से, चालाकी से झूठ बोला (उत्पत्ति 3:1 देखें)।
- परिणामस्वरूप, राहाब को पूर्ण इस्राएली नागरिकता प्राप्त हो गयी, परन्तु गिबोनवासी सदैव इस्राएल के दास बने रहे।
- इसके अलावा, इस्राएल के अगुवों ने परमेश्वर से सलाह न लेकर असफलताएँ प्राप्त कीं (यहोशू 9:14)।

❖ आशीर्वाद और अभिशाप।

- गिबोनियों की जान बख्शने का मतलब था परमेश्वर की सीधी आज्ञा का उल्लंघन करना (व्यवस्थाविवरण 7:1-2)। उनके साथ की गई शपथ को तोड़ना भी पाप माना जाता (यहोशू 9:19; भजन संहिता 15:4)। इस दुविधा का समाधान कैसे हुआ?
- उनकी जान तो बच गई, लेकिन उन्हें एक श्राप दे दिया गया (यहोशू 9:20-23)। इस श्राप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी उन्हें उनके सेवक बने रहना था। इस वजह से वे परमेश्वर के लोगों के साथ एक करीबी रिश्ता बना पाए, जिनसे वे कभी अलग नहीं हुए (नहेम्याह 7:6, 25)।
- इसके अलावा, परमेश्वर के भवन के लिए जल ढोने और लकड़हारे होने के कारण वे परमेश्वर के निरंतर संपर्क में रहे। परमेश्वर के अनुग्रह से, श्राप एक आशीर्वाद बन गया।